# Padma Vibhushan

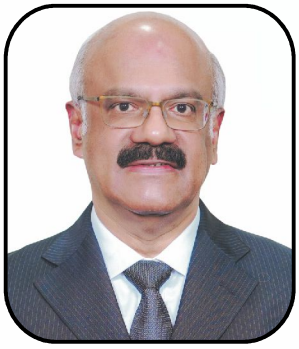

## DR. DUVVUR NAGESHWAR REDDY

Dr. Duvvur Nageshwar Reddy, Chairman of AIG Hospitals, Hyderabad, stands as a paragon of medical innovation, compassion and relentless pursuit of excellence in patient care. He is a globally renowned Gastroenterologist, who revolutionized the field of therapeutic endoscopy, transforming thousands of lives across the globe and made India a hub for world-class Gl Endoscopy services.

2. Born on 18th March 1956, Dr. Reddy did his MBBS from Kurnool Medical College thereafter MD from Madras Medical College and specialization in Gastroenterology from the PGIMER, Chandigarh. He started as a Professor of Gastroenterology at the Nizam's Institute of Medical Sciences in Hyderabad and then at the Guntur Medical College before setting up the Asian Institute of Gastroenterology in 1994. Soon the institute became the first in India to be recognized by the World Endoscopy Organization as a Centre of Excellence. His ground-breaking inventions such as the Natural Orifice Transluminal Endoscopic Surgery (NOTES) procedure and the NAGI Stent have saved countless lives by offering a minimally invasive alternative to traditional surgery.

3. Beyond clinical excellence, Dr. Reddy's commitment to affordable healthcare is unparalleled. As the founder of the Asian Healthcare Foundation, he has bridged rural-urban healthcare divides, deploying India's first mobile endoscopy units and screening programs that bring life-saving diagnostics to underserved communities. His Gl Endoscopy Technician Program has trained thousands, ensuring skilled care across the nation. His contributions extend to healthcare technology, where he has collaborated with IITs, IISc, and international research institutions to develop several diagnostic and therapeutic tools to treat gastrointestinal diseases.

4. An educator and mentor, Dr. Reddy has shaped the next generation of gastroenterologists, while his prolific research- over 1,090 publications and 18 textbooks-enriches global medical knowledge. During the COVID-19 pandemic, he spearheaded critical research, treatment protocols, and community initiatives, ensuring affordable COVID-19 care, free treatment for frontline workers, and vaccine strategy optimization. His scientific leadership and commitment to public health played a crucial role in shaping India's pandemic response. His leadership at AIG Hospitals produced critical research and protocols that guided national treatment strategies.

5. Dr. Reddy has been honoured with many awards such as the Rudolf Schindler Award by the American Society of Gastrointestinal Endoscopy—the first Indian to receive this distinction and the prestigious AAAS Fellowship, a testament to his scientific eminence. He has been awarded the Distinguished Educator Award by the American Gastroenterology Association, Master of the World Endoscopy Organization (MWGO), among several other eminent global accolades. In national awards, he had received the Dr. BC Roy Award in 1995, Padma Shri in 2002 and Padma Bhushan in 2016.

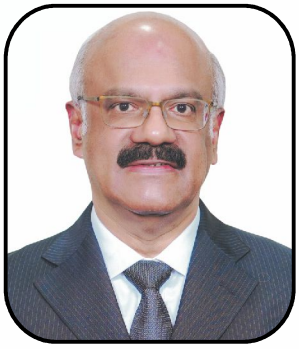

# डॉ. दुव्वूर नागेश्वर रेड्डी

हैदराबाद के एआईजी हॉस्पिटल्स के चेयरमैन डॉ. दुव्वूर नागेश्वर रेड्डी, मेडिकल इनोवेशन, करुणा और रोगी की देखभाल में उत्कृष्टता हासिल करने की अथक कोशिश के लिए जाने जाते हैं। वह विश्व प्रसिद्ध गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट हैं, जिन्होंने चिकित्सीय एंडोस्कोपी के क्षेत्र में क्रांति लाते हुए दुनिया भर में हजारों लोगों के जीवन को बदल दिया और भारत को विश्वस्तरीय जीआई एंडोस्कोपी सेवाओं का गढ़ बना दिया।

2. 18 मार्च 1956 को जन्मे, डॉ. रेड्डी ने कुरनूल मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस किया, उसके बाद मद्रास मेडिकल कॉलेज से एमडी किया और पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ से गैस्ट्रोएंटरोलॉजी में विशेषज्ञता हासिल की। उन्होंने 1994 में एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ गैस्ट्रोएंटरोलॉजी की स्थापना करने से पहले हैदराबाद में निज़ाम इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में गैस्ट्रोएंटरोलॉजी के प्रोफेसर के रूप में शुरुआत की और फिर गुंटूर मेडिकल कॉलेज में काम किया। जल्द ही यह संस्थान वर्ल्ड एंडोस्कोपी ऑर्गेनाइजेशन द्वारा उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता पाने वाला भारत का पहला संस्थान बन गया। नेचुरल ऑरिफिस ट्रांसल्यूमिनल एंडोस्कोपिक सर्जरी (नोट्स) प्रक्रिया और एनएजीआई स्टेंट जैसे उनके अभूतपूर्व आविष्कारों ने पारंपरिक सर्जरी के लिए न्यूनतम इनवेसिव विकल्प प्रदान करके अनगिनत लोगों की जान बचाई है।

3. नैदानिक उत्कृष्टता से आगे, सस्ती स्वास्थ्य सेवा के प्रति डॉ. रेड्डी की प्रतिबद्धता बेजोड़ है। एशियन हेल्थकेयर फाउंडेशन के संस्थापक के रूप में, उन्होंने ग्रामीण–शहरी स्वास्थ्य सेवा के बीच की खाई को पाट दिया है, भारत की पहली मोबाइल एंडोस्कोपी यूनिट और स्क्रीनिंग प्रोग्राम शुरू करते हुए जीवन रक्षक निदान को वंचित समुदायों तक पहुंचाया है। उनके जीआई एंडोस्कोपी टेक्नीशियन प्रोग्राम ने हजारों लोगों को प्रशिक्षित करते हुए देश भर में कुशल देखभाल सुनिश्चित की है। स्वास्थ्य सेवा प्रौद्योगिकी में भी उनका योगदान है, जहां उन्होंने गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल रोगों के इलाज के लिए कई नैदानिक और चिकित्सीय उपकरण विकसित करने के लिए आईआईटी, आईआईएससी और अंतरराष्ट्रीय शोध संस्थानों के साथ सहयोग किया है।

4. एक शिक्षाविद् और मार्गदर्शक, डॉ. रेड्डी ने गैस्ट्रोएंटेरोलॉजिस्ट की अगली पीढ़ी तैयार की है, और उनका प्रचुर शोध– 1,090 से अधिक प्रकाशन और 18 पाठ्यपुस्तकें– वैश्विक चिकित्सा ज्ञान को समृद्ध करती हैं। कोविड–19 महामारी के दौरान, उन्होंने महत्वपूर्ण शोध, उपचार प्रोटोकॉल और सामुदायिक पहलों की अगुआई करते हुए सस्ती कोविड–19 देखभाल, फ्रंटलाइन वर्कर के लिए मुफ्त उपचार और वैक्सीन रणनीति अनुकूलन सुनिश्चित किया। उनके वैज्ञानिक नेतृत्व और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता ने महामारी के प्रति भारत की कार्रवाई को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एआईजी हॉस्पिटल्स में उनके नेतृत्व ने महत्वपूर्ण शोध और प्रोटोकॉल तैयार किए, जिन्होंने राष्ट्रीय उपचार रणनीतियों को दिशा दिखाई।

5. डॉ. रेड्डी को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जैसे कि अमेरिकन सोसाइटी ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल एंडोस्कोपी द्वारा रुडोल्फ शिंडलर पुरस्कार – यह सम्मान पाने वाले वह पहले भारतीय हैं और प्रतिष्ठित एएएएस फेलोशिप, जो उनकी वैज्ञानिक उत्कृष्टता का प्रमाण है। उन्हें अमेरिकन गैस्ट्रोएंटरोलॉजी एसोसिएशन द्वारा प्रतिष्ठित एजुकेटर अवार्ड, मास्टर ऑफ द वर्ल्ड एंडोस्कोपी ऑर्गनाइजेशन (एमडब्ल्यूजीओ) और कई अन्य प्रतिष्ठित वैश्विक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। राष्ट्रीय पुरस्कारों में उन्हें 1995 में डॉ. बीसी रॉय पुरस्कार, 2002 में पद्म श्री और 2016 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।